ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online) : 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | **Impact Factor: 5.621**|| **A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal** |

Vol. 5, Issue 6, June 2016

भारत में विदेश नीति और गुटनिरपेक्षता

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College, Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

शोध आलेख का सार: विदेश नीति को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का कंन्द्रीय विषय माना जाता है। इससे राष्ट्र का मार्मिक और अमार्मिक, दोनों प्रकार का राष्ट्रीय हित प्रभावित होता है। समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण स्थान है, जो राष्ट्रीय हित की पूर्ति के साथ-साथ विश्व शांति व सुरक्षा की स्थापना, अंतर्राष्ट्रीय विधि के अनुपालन, अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, उपनिवेशवाद व नस्लवाद की समाप्ति, मानवाधिकार और नारी अधिकारों के विकास तथा पर्यावरणवाद से सम्बन्धित है। भारतीय वैदेशिक नीति के कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त निर्धारित किये जाते रहे हैं. जिनमें गुटनिरपेक्षता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया जाता है। वस्तुतः भारत की वैदेशिक नीति के निम्नलिखित सात प्रमुख सिद्धान्त बताएँ जाते हैं (1) गुटनिरपेक्षता अथवा स्वतन्त्र विदेश नीति, (2) विश्व शान्ति, (3) साम्राज्यवाद का विरोध, (4) पंचशील (5) संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग, (6) रंगभेद नीति का विरोध, (7) निःशस्त्रीकरण का समर्थन।

मूल शब्दः विदेश नीति, साम्राज्यवाद, पंचशील, निःशस्त्रीकरण, भू-राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, मानवाधिकार।

I. प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति का निर्धारण करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ही नहीं, वरन् विदेश नीति के निर्माता पं० जवाहर लाल नेहरू ने नीति के रूप में गुटनिरपेक्षता की नीति का चयन किया। सामान्य व्यवहार के भारत की विदेश नीति के इस 'महानतम सिद्धान्त को प्रकट करने के लिए 'गुटनिरपेक्षता' या 'तटस्थता' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है तट पर खड़े रहना, मझधार में न कूदना। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इस शब्द की व्याख्या अग्रलिखित रूप में की गई है: "एक ऐसा व्यक्ति जो दो लड़ने वाले व्यक्तियों में से किसी की भी सहायता न करें।" भारत की विदेश नीति एक स्वतन्त्र विदेश नीति है। यह सबसे अलग भी नहीं है और शीत युद्ध में किसी गुट के साथ संलग्न भी नहीं रहा है। इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि हमें किसी गुट का साथ देने के लिए हिचक भी नहीं होती जब पक्ष सही हो। इस प्रकार हमारी विदेश नीति स्वतन्त्र है, पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसे स्वतन्त्र विदेश नीति कहकर पुकारा भी था।

भारत 15 अगस्त, 1947 को जब स्वतन्त्र हुआ तो देश की बागडोर पंडित जवाहरलाल नेहरू के हाथ में आयी। उस समय ऐसी परिस्थितयाँ थीं कि हमें अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति की घोषणा करनी पड़ी। यह केवल तत्कालीन परिस्थतियों का ही परिणाम न था, इसकी जड़े तो बहुत गहरी थीं। हमारी इस विदेश नीति का जन्म नहीं हुआ, बल्कि विकास हुआ है। भारत की विदेश नीति ने इन शताब्दियों में विकसित होकर एक निश्चित रूप धारण किया है। पंडित नेहरू ने एक बार कहा था कि हभारत की विदेश नीति वही है जो कि वे स्वतन्त्रता संग्राम के समय सोचा करते थे। चूँकि भारत की विदेश नीति का उदय नहीं, बल्कि विकास हुआ है। इसलिए समय-समय पर हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। जिस समय भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई उस समय दुनिया दो गुटों (खेमों) में बँटी हुई थी एक गुट का नेता संयुक्त राज्य अमरीका तथा दूसरे गुट को सोवियत रूस था। दोनों गुटों में एक दूसरे गुट को पराजित करने के लिए दाँव-पेंच चल रहे थे, यहीं से शीत युद्ध शुरू हो गया था। अतः हम किसी गुट के साथ देते और फिर जब दोनों ही पक्ष हमारी ओर मित्रता का हाथ बढ़ा रहे थे तो हमें क्या आवश्यकता थी कि एक के हाथ को स्वीकार करें और दूसरे को अस्वीकार करें। दूसरी तरफ भौगोलिक, आर्थिक परिस्थितियाँ इस तरह की थीं कि जो हमें गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने को बाध्य करती रही हैं। साम्यवादी देशों से हमारी सीमाएँ टकराती है। अतः पश्चिमी देशों के साथ गुट में रहना विवेक सम्मत नहीं था। पश्चिमी देशों से विशाल आर्थिक सहायता मिलती हैं। अतः साम्यवादी गुट में सम्मिलित होना भी बुद्धिमानी नहीं थी। पंडित नेहरू ने स्पष्ट कहा था कि "किसी गुट के साथ सैनिक सन्धियों में बँधा जाने के कारण सदा उसके इशारे पर नाचना पड़ता है और साथ ही अपनी स्वतन्त्रता बिल्कुल ही नष्ट हो जाती है। जब हम असंलग्नता का विचार छोड़ते हैं तो हम अपना लंगर छोड़कर बहने लगते हैं। किसी देश से बँधाना आत्मसम्मान खोना है, में महत्वपूर्ण भूमिका महात्मा गाँधी द्वारा निभाई गई, अतएव भारत की के दार्शनिक विचारों का प्रभाव पड़ा। यह बहुमूल्य निधि का विनाश है।

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online) : 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | **Impact Factor: 5.621**|| **A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal** |

Vol. 5, Issue 6, June 2016

भारत को स्वतन्त्र कराने विदेश नीति पर महात्मा गाँधी, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति का विश्व के देशों द्वारा यह कहकर आलोचना की गई कि यह नीति अवसरवादी, अव्यावहारिक. आदर्शवाद पर आधारित, नकारात्मक व निष्क्रिय है। किसी देश ने कहा है कि आधुनिक युग में तटस्थता सम्भव नहीं है, किसी देश ने इसे नेहरू की एशिया और अफ्रीका के नेतृत्व की महत्वाकांक्षा का कारण बताया। यह सन्देह भी प्रकट किया गया कि जब अमरीका और रूस तटस्थ नहीं रह पाए तो भारत कैसे तटस्थ रह सकता है। यह भी कहा गया कि इस प्रकार नेहरू एक तृतीय गुट बनाना चाहते हैं। एक पश्चिमी पत्र ने तो यहाँ तक प्रकाशित कर दिया था कि "कहीं गाँधी टोपी चेम्बरलेन के छाते की तरह उड़ी-उड़ी न फिरे।" दुनिया की ऐसी आशंकाएँ निर्मूल सिद्ध हुई। सोवियत संघ के रुख में धीरे-धीरे बदलाव आया और वह भारत की तटस्थता का सम्मान करने लगा।
भारत द्वारा विदेश नीति के रूप में गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने से हमें विभिन्न परिस्थितियों में कई प्रकार की उपलब्धि याँ प्राप्त हुई। इस विदेश नीति के फलस्वरूप विश्व में भारत का साख और प्रतिष्ठा बढ़ी है। विश्व के अधिकांश नव स्वतन्त्र राष्ट्रों ने तटस्थता की नीति को ग्रहण किया है और तटस्थतावादी (निर्गुट) राष्ट्रों के तीन प्रमुख प्रवर्तक नेताओं में से नेहरू एक थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्षता की अवधारणा का आगमन तथा उतरोत्तर विकास हुआ। इसमें पंडित जवाहर लाल नेहरू (भारत), जोसेफ ब्रॉज टीटो (युगोस्लाविया), जमाल अब्दुल नासिर (मिश्र), सुकर्णो (इंडोनेशिया) तथा वामे एनकुमा (घाना) की संस्थापक नेता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका रही।' गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का 17 शिखर सम्मेलन वर्ष 1961 से वर्तमान तक सम्पन्न हुए हैं। प्रथम शिखर सम्मेलन 16 सितम्बर, 1961 में बेलग्रेड (युगोस्लाविया) में सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आधार पर स्वतंत्र वैदेशिक नीति के अनुसरण पर बल दिया। 5-10 अक्टूबर, 1964 में द्वितीय शिखर सम्मेलन काहिरा (यूनाइटेड अरब रिपब्लिक) में आयोजित किया गया, जिसमें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने पाँच सूत्री प्रस्ताव रखा (1) सीमा विवादों का शांतिपूर्ण समाधान, (2) परमाणु निःशस्त्रीकरण, (3) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से आर्थिक विकास, (4) विदेश प्रभुत्व, आक्रमण तथा तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों से मुक्ति तथा (5) संयुक्त राष्ट्र के निर्णयों और कर्यक्रमों का समर्थन। गुटनिरपेक्ष संगठन का तीसरा शिखर सम्मेलन 8-10 सितम्बर, 1970 में लुसाका (जांबिया) में आयोजित किया गया, जिसमें भारत ने संगठन के लिए स्थायी सचिवालय पर बल दिया। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का चौथा शिखर सम्मेलन 5-9 सितम्बर, 1973 को अल्जीयर्स (अल्जीरिया) में आयोजित किया गया। इस शिखर सम्मेलन में तनाव-शैशिल्य का स्वागत किया गया तथा संगठन के सदस्य देशों के आपसी तालमेल पर भारत ने अधिक बल दिया। श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में 16 से 19 अगस्त, 1976 तक गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का पाँचवां शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही। उक्त सम्मेलन में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के विकासशील देशों को भी तनावहीनता की स्थिति में लाने का नारा बुलन्द किया।" छठा शिखर सम्मेलन क्यूबा की राजधानी हह्वाना में 3 सितम्बर, 1979 को आयोजित किया गया, जिसमें भारत ने संगठन के देशों को एकजूट रहने की बात कही। सातवाँ शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली (भारत) में 7 से 12 मर्च, 1983 तक आयोजित की गई, जिसमें निःशस्त्रीकरण जैसे कई मुद्दे पर अधिक बल दिया गया।" हरारे (जिम्बाब्वे) में 1 से 6 सितम्बर, 1986 में आठवाँ बेलग्रेड (युगोस्लाविया) में 4 से 7 सितम्बर, 1989 में नवाँ; जकार्ता (इंडोनेशिया) में 1 से 6 सितम्बर, 1992 में दशवाँ; कार्टाजिना (कोलंबिया) में 18-20 अक्टूबर, 1995 में ग्यारहवाँ; डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में 2 से 4 सितम्बर, 1998 में बारहवाँ; क्काललंपुर (मलेशिया) में 20 से 25 फरवरी, 2003 में तेरहवाँ; हवाना (क्यूबा) में 15 से 16 सितम्बर, 2006 को चौदहवाँ; शर्म-अल-शेख (मिश्र) में 11 से 16 जुलाई, 2009 को पन्द्रहवाँ तथा तेहरान (ईरान) में 26 से 31 अगस्त, 2012 तक सोलहवाँ शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इन तमाम शिखर सम्मेलनों में भारत की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक भूमिका लगभग समान तथा महत्वपूर्ण रही है। गुटनिरपेक्ष संगठन का 17वाँ शिखर सम्मेलन पोरलामार (वेनेजुएला) में वर्ष 2016 में सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत ने आतंकवाद की समाप्ति तथा विश्व शांति हेतु पर्यावरणवाद और मानावाधिकार का जोरदार समर्थन किया है।

यह उल्लेखनीय है कि सभी शिखर सम्मेलनों में भारत ने गुटनिरपेक्ष देशों के हित के साथ-साथ अपनी वैदेशिक नीति के सिद्धान्त के अनुरूप विश्व शांति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की बात किया है। दूसरे शब्दों में, सभी गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलनों में भारत प्रभावशाली व प्रतिनिधि रहा है, चाहे वह काहिरा सम्मेलन हो, चाहे कोलम्बो, 1976 का सम्मेलन हो अथवा लुसाका में आयोजित 1971 का सम्मेलन हो।" प्रत्येक सम्मेलन में भारत को असीम सम्मान प्राप्त हुआ है। भारत के निर्गुट राष्ट्र के रूप में विश्व शान्ति की दिशा में कई बार महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। भारत ने अपनी निर्गुट विदेश नीति द्वारा विश्व को तृतीय विश्व युद्ध के कगार की ओर ले जा रहे. शीतयुद्ध को कम किया है। नेहरू ने सोवियत रूस और अमरीका को निकट लाने के लिए कई प्रयास किए और उनके कुछ प्रयास बहुत सफल भी हुए। भारत की गुटनिरपेक्ष नीति के झण्डे के नीचे वर्मा, मलेशिया, श्रीलंका, हिन्देशिया, जैसे राष्ट्र ही नहीं आए अपितु अफ्रीका के लगभग 42 नव स्वतन्त्र देशों तथा दक्षिणी अमरीका के राष्ट्रों ने भी इसी नीति का अनुसरण किया है और वर्तमान समय में इसकी सदस्य संख्या बढ़कर 120 तक हो गई है।

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online) : 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | **Impact Factor: 5.621|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |**

Vol. 5, Issue 6, June 2016

II. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य भारत के विदेश नीति की एक प्रमुख तत्त्व के रूप में गुटनिरपेक्षता के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक आयाम का अवलोकन है। इस शोध आलेख का उद्देश्य गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलनों में भारतीय वैदेशिक नीति के दृष्टिकोण को परिवर्तित स्वरूप को भी स्पष्ट करना है।

III. परिकल्पना

प्रस्तुत शोध आलेख का शीर्षक "भारत में विदेश नीति और गुटनिरपेक्षता" है। भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में कई तत्त्वों की भूमिका रही है तथा इसका एक प्रमुख सिद्धान्त "गुटनिरपेक्षता की नीति" भी रहा है। भारत का गुटनिरपेक्ष नीति प्रारम्भ से वर्तमान तक एक समान नहीं रही है। अब प्रश्न उठता है कि वह कौन-सी कारण और परिस्थितियाँ हैं, जिनके प्रभाव में भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आयाम में परिवर्तन आया है। वर्ष 2014 में नरेन्द्र मोदी को भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद वैदेशिक नीति का परिप्रेक्ष्य व्यावहारिक रूप में वैश्विक हुआ है। इसलिए गुटनिरपेक्षता के प्रति भारतीय दृष्टिकोण में भी बदलाव हुआ है।

IV. साहित्य सर्वेक्षण

भारत की विदेश नीति तथा गुटनिरपेक्षता पर अबतक अनेक महत्वपूर्ण अध्यन सम्पन्न हुए हैं। इस विषय पर अध्ययन में कुछ साहित्य का सामान्य अवलोकन अनिवार्य प्रतीत होता है। ऐसा करना शोध आलेख-लेखन को सार्थकता प्रदान करता है। वस्तुतः शोध आलेख को प्रभावी बनाने के लिए साहित्य सर्वेक्षण का अनिवार्य माना जाता है। इसी अनिवार्यता का ध्यान में रखते हुए हमने अपने प्रस्तुत शोध आलेख की तैयारी में निम्नलिखित प्रमुख साहित्य का सर्वेक्षण है:

1. वी०एन० खन्ना, लिपाक्षी अरोड़ा. भारत की विदेश नीति. तृतीय संशोधित संस्करण, निकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा० लि०. नई दिल्ली, 2004
2. प्रो० बी०एम० जैन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2003
3. डॉ० एस०पी० सिंहल, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2014
4. डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा एवं शशी के० जैन, राजनय के सिद्धान्त, कॉलेज बुक्र डिपो, जयपुर, 2006
5. भोला चटर्जी, ए स्टडी ऑफ रिसेन्ट नेपालीज पॉलिटिक्स, द वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967
6. लियो ई० रोज, नेपाल स्ट्रैटजी फॉर सरवाइवल, आक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई, 1991
7. गाँधीजी राय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, भारती भवन, पटना, 2014 (द्वितीय संस्करण)

V. शोध प्रवृधि

प्रस्तुत शोध आलेख के लेखन में ऐतिहासिक एवं वस्तु-विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लिया गया है। शोध आलेख की तैयारी में पूर्व का साहित्य सर्वेक्षण का अवलोकन किया गया है, जिसके सन्दर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि इसमें तुलनात्मक पद्धति का भी आंशिक प्रयोग किया गया है।

VI. निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति के सिद्धान्तों में आंशिक परिवर्तन के बाद भी लगभग स्थायित्व दृष्टिकोण होती रही है। भारतीय विदेश नीति के आधारभूत सिद्धान्तों में गुटनिरपेक्षता को स्वीकार किया गया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत ने इस नीति के परिप्रेक्ष्य में नेतृत्व भी किया है। स्पष्टतः गुटनिरपेक्षता को भारतीय वैदेशिक नीति की आधारभूत विशेषता कहा जा सकता है। स्वतंत्र भारत के शुरूआती दिनों में इसे अधिक महत्त्व दिया गया। वर्ष 1990 के दशक के बाद जब इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न खड़ा किया जाने लगा है तब भारत ने भी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अधिक सोंचना प्रारम्भ कर दिया। वर्ष 2014 के बाद मोदी के नेतृत्व में भारत की वैदेशिक नीति में गुटनिरपेक्षता महत्वपूर्ण होकर भी द्वितीयक बन गया है।

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online) : 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | **Impact Factor: 5.621**|| **A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal** |

Vol. 5, Issue 6, June 2016

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. डॉ० एन० के० श्रीवास्तव, भारत की विदेश नीति, साहित्य भवन, आगरा 1983, पृष्ठ-25
2. तथैव, पृष्ठ 25
3. डॉ० एन० के० श्रीवास्तव, भारत की विदेश नीति, साहित्य भवन, आगरा 1983, पृष्ठ 26 3
4. डॉ० बी०एल० फड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य धवन, आगरा, 1996, पृष्ठ 354
5. गाँधीजी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, भारती भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, द्वितीय संस्करण, 2014, पृष्ठ 130
6. तथैव, पृष्ठ 134
7. तथैव, पृष्ठ 135
8. डॉ० मदोदर राव, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, रावत पब्लिकेशन, हरियाणा, वर्ष 2016 (पंचम् संस्करण), पृष्ठ 178
9. गाँधीजी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पृष्ठ-134
10. डॉ० मदोदर राव, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पृष्ठ 178
11. गाँधीजी राय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, पृष्ठ 134 136
12. तथैव, पृष्ठ 136
13. तथैव, पृष्ठ 136-137
14. तथैव, पृष्ठ 1.34
15. डॉ० एन० के० श्रीवास्तव, भारत की विदेश नीति, पृष्ठ-30